डॉ० सतीश चन्द्र पाठक -
हिन्दी विभाग, एस०एस० कॉलेज, जहानाबाद।
B.A. I Hindi Hons.

कानों में कंगना शीर्षक कहानी का मूल्यांकन या समीक्षा कीजिए।

'कानों में कंगना' शीर्षक कहानी के कहानीकार राजा राधिका रमण प्रसाद सिंह हैं। राजा साहब प्रेमचन्द परम्परा के उच्च कोटि के कथाकार थे। इन्होंने आधुनिक हिन्दी कहानियों के विकास में ऐतिहासिक भूमिका का निर्वाह किया था। यद्यपि वे सूर्यपुर के राजा थे तथापि साहित्य इनकी जीवनी शक्ति थी। इन्होंने राम रहीम, पुरुष और नारी, तथा संस्कार जैसे उपन्यासों की रचना की वहीं सावनी समाँ, टूटा तारा और सूरदास जैसे संस्मरण ग्रंथों की भी रचना की। 'कुसुमांजलि' तथा 'गांधी टोपी' इनके दो कहानी संग्रह हैं। राजा साहब जिस काल खंड में अपने साहित्य का सृजन कर रहे थे वह हिन्दी कथा साहित्य का संक्रमण काल था। आधुनिक हिन्दी कहानी अभी शैशवावस्था में थी। ऐसे समय में इनकी कृतियों का महत्व स्वयं में ऐतिहासिक हो जाता है। जैसे उसने कहा था कहानी की श्रेष्ठता से चमत्कृत होकर समीक्षकों का एक वर्ग उस पर तरह-तरह के आरोप लगाते थे वैसे ही 'कानों में कंगना' शीर्षक कहानी पर भी अनेक प्रश्न चिन्ह उठ चुके हैं जो इसकी श्रेष्ठता को रेखांकित करती है।

हृषीकेश के पास एक गहन किन्तु अत्यन्त सुन्दर वन में योगीश्वर अपनी एकमात्र पुत्री किरण के साथ कुटी बनाकर रहते थे। वह वन क्या था स्वर्ग का नन्दन कानन भी उसकी शोभा के सामने फीका था। उस वन में पंचवटी और वृन्दावन के कुंजों का सौन्दर्य बसता था। इसी नैसर्गिक परिवेश में किरण का

पालन-पोषण हुआ था। प्राकृतिक परिवेश की सहजता, स्वाभाविकता तथा अकृत्रिमता का प्रभाव किरण की काया और आत्मा पर भी परिलक्षित होता था। वह अत्यन्त सरल एवं स्नेहिल थी। वनदेवियों जैसा सौन्दर्य और निरीह मूक पशुओं जैसा सरल सहज हृदय उसकी विशिष्टता थी। नागरिक छल-कपट उसे छू भी नहीं गया था। योगीश्वर आध्यात्म की साधना में रत क्रम से उच्चतर भूमिका पर चढ़ते जा रहे थे। किरण प्रकृति के साहचर्य में सरल से सरलतर होती जा रही थी। इसी बीच कथानायक नरेन्द्र योगीश्वर का सानिध्य प्राप्त करने की अभिलाषा से उनके पास आया। नरेन्द्र के दादा जी और योगीश्वर बचपन के मित्र थे। दोनों में अन्तरंगता थी। अतः योगीश्वर का सहज स्नेह नरेन्द्र को तुरन्त ही प्राप्त हो गया। उसे इसके पितामह ने समस्त शास्त्रों के अध्ययन के लिए योगीश्वर के पास भेजा था। नरेन्द्र प्रतिदिन उनकी कुटी में आकर शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त करने का प्रयत्न करता। इसी क्रम में नरेन्द्र की दृष्टि योगीश्वर की कन्या किरण पर पड़ जाती। किरण कभी मृगों के समान चौकड़ी भरती, कभी अपने आँचल में टिकोरे भर लाती तो कभी उसका आँचल जंगली फूलों से भरा होता। उसकी आँखों में कभी तारे झिलमिलाते तो कभी सपने फूल उठते। ऐसे ही एक दिन किरण अपने में खो डूबी हुई आगन दौड़ कर रही थी। नरेन्द्र की दृष्टि उधर ही लगी हुई थी। उसे लगा कि उसके कानों में कुछ है। उसने किरण के पास जाकर उससे कहा कि किरण तेरे कानों में क्या है? किरण ने अपने बालों की लट को कानों से हटाते हुए उत्तर दिया- कंगन। बालों को हटाकर कानों के कंगन